"लेखनीय महाकषाय का सन्तर्पण जन्य विकारों के सन्दर्भ में सैद्धान्तिक विवेचन"

डॉ0 प्रीति शर्मा[1],रीडर द्रव्यगुण विभाग, कृतिका आयुवेर्दिक मेडिकल कालेज एवं हॉस्पिटल, **बरेली**

डॉ0 भावना सिंह[2],प्रोफेसर एवं प्रधानाचार्या,जी0 एस0 आयुवेर्दिक मेडिकल कालेज एवं हॉस्पिटल,**पिलकुआ**

सारांश(Abstract)

मनुष्यों के पास समय की कमी के कारण शारीरिक श्रम के प्रति उदासीनता एवं जंक फूड का प्रचलन बढ रहा है जिसके कारण भोजन में अधिक मात्रा में शर्करा व स्नेह की उपस्थिति होती है,जिसके कारण स्थौल्य, मधुमेह, आलस्य, निद्रा आदि सन्तर्पण जन्य विकार प्रतिदिन बढ रहे हैं और उसी के कारण विभिन्न उपद्रव उत्पन्न होते हैं। आधुनिक विज्ञान में इन विकारों में उत्पन्न होने वाले लक्षणों का लाक्षिणक उपचार किया जाता है, जिनके कारण इन विकारों का सफल उपचार नहीं हो पाता है।वर्तमान युग की इस समस्या के निराकरण हेतु प्रस्तुत विषय अनुसंधानकर्ता द्वारा चयन किया गया है। अतः **"लेखनीय महाकषाय का सन्तर्पण जन्य विकारों के सन्दर्भ में सैद्धान्तिक विवेचन"** प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य में लेखनीय महाकषाय के सभी दस द्रव्यों का आयुर्वेद साहित्य एवं नवीन शोध ग्रन्थों में पुर्नावलोकन करके विवेचना प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास भविष्य में अनेक गम्भीर रोग प्रमेह, ह्रदय रोग स्थौल्य रोग जैसे सन्तर्पण जन्य व्याधियों में लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों के चिकित्सीय परीक्षण के लिए आधारस्तम्भ रूप सिद्ध होगा।

सूचक शब्द

सन्तर्पणजन्य विकार, लेखनीय महाकषाय, स्थौल्य, मधुमेह,

परिचय

आचार्य चरक के अनुसार, जिस शास्त्र में आयुष्य एवं अनायुष्य द्रव्यों एवं उनके गुण कर्मो का ज्ञान हो, उस शास्त्र को आयुर्वेद कहते हैं।[1]

यतश्च आयुष्याणि अनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेदः। (च0सू0 30/23)

आयुर्वेद में वर्णित सभी द्रव्यों का चिकित्सा हेतु प्रयोग सम्भव है एवं युक्ति पूर्वक किसी भी द्रव्य का प्रयोग औषध रूप में किया जा सकता है । अतः किसी शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उसके द्रव्यों को व्यवस्थित करना आवश्यक है और यह कार्य वर्गीकरण के द्वारा होता है। अतः वर्गीकरण वैज्ञानिक अध्ययन का प्रथम सोपान माना जाता है। आयुर्वेद संहिताओं में द्रव्यों का वर्गीकरण अनेक दृष्टिकोणों से किया गया है। चरक संहिता में आचार्य ने द्रव्यों का कर्मानुसार वर्गीकरण अत्यन्त विशद एवं वैज्ञानिक रूप में किया है। आचार्य चरक ने पचास महाकषाय वर्णित किये हैं ,इसमें लेखनीय महाकषाय भी एक है। आचार्य चरक ने लेखनीय महाकषाय का वर्णन चरक सूत्रस्थान के चतुर्थ अध्याय षड्विरेचनशताश्रितीयाध्याय के अन्तर्गत किया है।[2]

मुस्तकुष्ठहरिद्रादारूहरिद्रावचातिविषाकटुरोहिणी चित्रक चिरबिल्ब हैमवत्य इति दशेमानि लेखनीय भवन्ति ।। (च0सू04/3)

लेखनीय महाकषाय में वर्णित औषध द्रव्य निम्न है...

Name	*Botanical name*	*Family*
मुस्तक	*Cyperus rotundus*	*Cyperaceae*
कुष्ठ	*Saussurea lappa*	*Compositae*
हरिद्रा	*Curcuma longa*	*Zingiberaceae*
दारूहरिद्रा	*Berberis aristata*	*Berberidaceae*
वचा	*Acorus calamus*	*Araceae*
अतिविषा	*Aconitum heterophylum*	*Rannunculaceace*
कटुरोहिणी	*Picrorhiza kurroa*	*Scrophulariaceace*
चित्रक	*Plumbago zeylanica*	*Plumbagiaceace*
चिरबिल्व	*Holoptelea integrifolia*	*Ulmaceace*
हैमवती वचा	*Isris ensata*	*Iridaceace*

वर्तमान समय में मनुष्यों में होने वाले रोगों में सन्तर्पणजन्य विकारों की संख्या प्रतिदिन बढती जा रही है जैसे प्रमेह,स्थौल्य रोग,हृदय रोग आदि । जिसका मुख्य कारण मेदो दुष्टि एवं कफवृद्वि कहा गया है। आधुनिक चिकित्सा के अनुसार भी लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों की कार्मुकता प्रमेह रोग, हृदय रोग और स्थौल्य रोगों में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

आचार्य चरक ने सन्तर्पणजन्य रोगो में प्रमेह पिडिका, कोठा, कण्डू, पाण्डू, ज्वर, कुष्ठ, आमदोष, मूत्रकृच्छ भोजन में अरूचि, अनिन्द्रा, नपुंसकता, अतिस्थूलता, आलस्य, गुरूगात्रता, इन्द्रियस्त्रोतसां लेप, बुद्धिभ्रम, प्रमीलक शोथ इसी प्रकार के अन्य रोग की गणना की है।[3]

अध्ययन पद्धति एवं सामग्री

इस शोध पत्र में लेखनीय महाकषाय के समुचित अध्ययन हेतु आयुर्वेद वाडमय के निम्न ग्रन्थों का विस्तृत अध्ययन किया गया है.....

- वैदिक साहित्य
- वृहत्त्रयी (चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, वाग्भट्ट संहिता)
- निघण्टु (राज निघण्टु, प्रिय निघण्टु ,भावप्रकाश निघण्टु, मदनपाल निघण्टु, धनवंतरि निघण्टु ,कैयदेव निघण्टु)
- शोध पत्र

लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों का अध्ययन

❖ ***मुस्तक (Cyperus rotundus)*** – यह समस्त भारत में जलीय व आर्द्र प्रदेश में 6 हजार फीट की ऊंचाई तक होता हैं।इसका क्षुप बहुवर्षायु 0.5 से 2 फुट उॅचा होता है। इसका काण्ड अन्तर्भूमिज कन्दों के बीच से निकलता है। इसके काण्ड से

अनेक लगभग 0.5 इंच व्यास के अंडाकार, बाहर कृष्ण वर्ण या भूरे, भीतर श्वेत सुगन्धित अनेक कन्द लगे रहते हैं। इसका कन्द शूकर को अतिप्रिय हैं। मुस्तक के कन्द का प्रयोग वजन कम करने व स्थौल्य रोग में किया जाता है।[4] धनवन्तरि निघण्टु [5]में मुस्तक 3 प्रकार का बताया हैं.....1.. मुस्तक (भद्रमुस्तक), 2.. नागर मुस्तक, 3.. जलमुस्तक (कैवर्त्त मुस्तक)राज निघण्टु में इसे उच्चटा भी कहा हैं।[6]

गुणकर्म ...

रस – तिक्त,कटु,कषाय

गुण – लघु,रूक्ष

वीर्य – शीत

विपाक – कटु

❖ **कुष्ठ** ***(Saussurea lappa)***– का उत्पति स्थान कश्मीर है।कुष्ठ का क्षुप 6–7 फुट ऊंचा एवं बहुवर्षायु होता है। इसके पुष्पमुण्डक में गहरे नीले बैंगनी या कृष्णाभ पुष्प होते हैं। इसका मुख्य प्रयोज्यांग मूल है कुष्ठ का मूल स्थूल और बहुवर्षायु होता है। इसके मूल का संग्रह शरद ऋतु में करते हैं। सूखे मूल तीक्ष्ण मधुरगन्धि, तिक्त एवं धूसर या हल्के से मोटे, दृढ 7–15 से0मी0 लंबे और 1.5 से0मी0 मोटे होते हैं। इसका मुख्य कर्म शुक्रशोधन है। इसमें *flavonoid एवं sesquiterpenes* पाये जाते हैं।[7] इसमें पाये जाने वाले *protientyrosine phosphates* नामक तत्वका प्रयोग प्रमेह व हृदय रोग में किया जाता है।[8]

गुणकर्म–

रस – कटु

गुण – लधु, रूक्ष, तीक्ष्ण

वीर्य – उष्ण

विपाक – कटु

❖ **हरिद्रा** *(Curcuma longa)*– समस्त भारत में विशेषतः बंगाल, बम्बई, व तमिलनाडु में इसकी खेती होती है। इसका क्षुप बहुवषायु 2–3 फीट ऊंचा छोटे काण्ड वाला होता है । इसके पत्रों पर सूक्ष्म सफेद बिन्दु होते हैं और पत्रों की गन्ध आम की तरह होती है । इसके कन्द आर्द्रक सदृश किन्तु उससे बडे, चमकीले पीले होते हैं। कन्दों को प्रयोग में लाने से पहले उबाल कर सुखा लेते हैं।भारत इसका सबसे बडा उत्पाद है।इसका मुख्य प्रयोज्यांग कन्द है एवं मुख्य कर्म कुष्ठघ्न है जिसमें *ethanol extract* तत्व पाया जाता हैं। इसमें एक उडनशील तैल भी पाया जाता है जिसमें टर्पिन होता है जो कोलेस्टेरोल घुलाने के लिये अच्छा द्रव्य है। हरिद्रा का प्रयोग अतिस्थौल्य की चिकित्सा में विशेष रूप से पाया जाता है।[9] भा0नि0 में हरिद्रा दो प्रकार की बतायी है कर्पूर हरिद्रा और वन हरिद्रा ।[10]

गुणकर्म–

रस – तिक्त, कटु

गुण – रूक्ष, लघु

वीर्य – उष्ण

विपाक – कटु

दोषध्नता – कफवातहर

❖ **दारूहरिद्रा** *(Berberis aristata)* .हिमालय प्रदेश में 6–10 हजार फीट की ऊचाई पर तथा नीलिगिरी और श्रीलंका में पायी जाती है। इसका कंटकित गुल्म 6–18 फीट ऊंचा होता है। इसके पत्र दृढ चर्मवत् दूर दूर पर कंटकीय दांतो से युक्त 1–3 इंच लम्बा होता है। इसके फल अण्डाकर, नीले बैंगनी रंगं के चमकीले होते हैं। दारूहरिद्रा मुख्यतः यकृत पर कर्म करने वालों द्रव्यों में से एक है। इसका मूल काण्ड व फल प्रयोग में लाया जाता हैं।इसके मूल में एक पीत वर्ण तिक्त क्षाराभ बर्बेरिन पाया

जाता हैं।दारूहरिद्रा को हकीम लोग झरिष्क कहते हैं।दारूहरिद्रा द्वारा जो घनसत्व प्राप्त होता हैं उसे रसांजन कहते हैं। दारूहरिद्रा मूल प्रमेह में प्रयोग की जाती है[11] एवं इन्सुलिन जैसा प्रभाव दिखाने में सहायक होता है।[12] दारूहरिद्रा मूलत्वक् में एन्टीहाइपरग्लाइसीमिक प्रभाव पाया जाता है।[13]

गुणकर्म–

रस – .तिक्त,कषाय

गुण – .लघु,रूक्ष,

वीर्य– उष्ण

विपाक– कटु

❖ **वचा** *(Acorus calamus)*.–यह जलयुक्त भूमि में व समस्त भारत व श्रीलंका में 6000 फीट की ऊंचाई तक वन्य रूप में या उपजाई हुई मिलती है। कश्मीर, मणिपुर तथा नागालैण्ड में अधिक होती है। इसका सदाहरित क्षुप जलप्रायः भूमि में 3–5 फीट ऊॅचा होता है। इसका कन्द भूमि में आद्रक के समान फैलता है और मध्यमांडगुलि के समान स्थूल 5–6 पर्ववाला, बेलनाकार या कुछ दवा हुआ और सुगन्धि होता है। वाहर से यह हल्का भूरा या बैगनी भूरा होता है। तोडने पर भीतर हरितवर्ण के होते हैं। इसके पत्र में से एक प्रकार का उडनशील तैल निकलता है। जिसमें मुख्यतः एसारिल ऐल्डीहाईड होता हैं वचा वजन, कोलेस्टेराल, LDL, ट्राईग्लिीस्राइड को कम करने में व HDL की सान्द्रता बढानें में सहायक होता है।[14]

गुणधर्म–

रस – कटु,तिक्त,

गुण – लधु, तीक्ष्ण

वीर्य – उष्ण,

विपाक – कटु,

प्रभाव – मेध्य

❖ **अतिविषा** *(Aconitum heterophyllum)*.– अतिविषा पश्चिमोत्तर हिमालय में कुमांऊ तक 6–15 हजार फीट की ऊंचाई पर होती है। इसका क्षुप छोटा तथा काण्ड नीचे चिकना और उपर रोमश होता है एवं ऊंचा होता है। इसके पुष्पं चमकीले नीले या हरिताभ नील बहुपुष्पी मजरी में होते हैं। फल पंचकोषीय अनेक बीज वाला होता है। इसका मूल द्विवर्षायु तोडने पर ऊपर से भूरा भीतर श्वेत तथा बीच में 4...5 काले बिन्दुओं से युक्त 1 से 1.5 इंच लम्बा व .5 इंच मोटा होता है। इसे बाल रोगों में प्रयोग करने के कारण **वालरोगनाशिनी**[15] एवं बाल भेषज भी कहते हैं। इसका प्रयोज्यांग कन्द है।अतिविषा को शिशुभैज्या भी कहा जाता है।यह बाल रोगों की चिकित्सा में विशेष रूप से प्रशस्त है। अतिविषा नाम होनेपर भी यह विषरहित हैं और शरीरस्थ विषवत् दोषो को दूर करने के कारण अतिविषा कहलाती है।[16] प्रिय निघण्टु में यह दो प्रकार की श्वेत और अरूण अतिविषा बतायी है।[16] मदनपालनिघण्टु में चतुर्विध अतिविषा का वर्णन ह–ैं रक्त, श्वेत, कृष्ण, पीत। रक्त वर्ण अतिविषा को गुणों में उत्तम कोटि का कहा जाता है। राजनि0 में अतिविषा को 3 प्रकार का शुक्ल, कृष्ण, अरूण वर्ण का कहा है।[17]

गुण कर्म–

रस – तिक्त, कटु।

गुण – लधु, रूक्ष

वीर्य – उष्ण।

विपाक – कटु

❖ **कुटकी** *(Picrorhiza kurroa)*– यह हिमालय प्रदेश में मिलती है। कश्मीर से सिक्किम तक सभी भागों में होती है। इसका छोटा, बहुबर्षायु, प्रायः रोमश क्षुप होता है मूलस्तम्भ (भौतिक काण्ड) दृढ, 9–10 इंच लम्बा, छोटी अंगुली जितना स्थूल, विशीर्ण पत्रधारों से आवृत, सपर्णशील होता है। मूल (भौमिक काण्ड) है। इसमें अनेक गाठें होती है। इसी कारण इसको शतपर्वा कहते हैं। कुटकी पर छोटे छोटे दाग होते हैं। इसलिए इसको चक्रांगी कहते हैं। बाजार में इसके भूरे रंग के 1–2 इंच लम्बे, आधा से 1 से.मी. व्यास के बेलनाकार लम्बाई में सिकुडन युक्त कुछ मुडे हुये टुकडे मिलते हैं। इसकी बाहरी त्वचा अत्यन्त पतली, छुटती हुई होती है। और इसके उपर चक्राकार चिन्ह होते हैं। तोडने पर भीतर की ओर कृष्णवर्ण होते हैं तथा स्वाद में अतितिक्त होते हैं।यह भंगुर होते हैं। तोडने पर तुरन्त टूट जाती है, इसमें मछली जैसी गन्ध आती है। इसलिए इसको मत्स्यशकला कहते हैं। पेडों के काण्ड पर लगने वाली है अतः यह गुडुची की तरह काण्डरूहा है। इसका प्रयोज्यांग मूल/कन्द है। इसमें पाया जाने वाला रासायनिक तत्व कुर्रिन, और कुटकिन है जो प्लीहा के स्त्रावों को बढाता है, मेद को कम करता है। एक शोध कार्य के अनुसार कुटकी कोलेस्टेराल और ट्राइग्लीस्राइडस को 12 सप्ताह में कम करता है।[18]

गुणकर्म

रस – तिक्त कटु

वीर्य – शीत

विपाक – कटु

गुण – रूक्ष, लघु

दोषघ्नता – कफपित्तध्न

❖ **चित्रक** *(Plumbago zeylanica)* – इसका क्षुप छोटा वहुवर्षायु व झाडीदार होता है। इसके पुष्प, पुष्पदण्ड पर गुच्छों में लगे रहते हैं। फल चिपचिपे ग्रन्थिमय स्थायी बाहकोश में होता है। इसका मूल अंगुलि के समान मोटा होता है व छाल पर छोटे छोटे उभार होते हैं। स्वाद में कटु, तीक्ष्ण व अप्रिय गन्ध होती है। इसका प्रयोज्यांग मूल,पत्र है जिसमें मुख्यतः प्लम्बेजिन नामक तत्व पाया जाता है जो स्थौल्य रोग को नष्ट करने में सहायक होता है। चित्रक मूल का प्रयोग स्थौल्य रोग की चिकित्सा में पाया गया है।[19,20,21,,] इसके 2 प्रकार है –1.श्वेतचित्रक 2.रक्तचित्रक

श्वेत चित्रक विशेषता बंगाल, उत्तरप्रदेश, दक्षिण भारत व श्री लंका तथा रक्त चित्रक जो रवासिया पहाड, सिक्किम कूच बिहार में अधिक मिलता है। इसकी खेती पूरे भारत में की जाती है।

गुणकर्म–

रस – कटु,

गुण – लधु, रूक्ष, तीक्ष्ण,

वीर्य – उष्ण,

विपाक – कटु

❖ **चिरबिल्व** *(Holoptelia integrifolia)* – यह समस्त भारत में 2 हजार फीट की ऊंचाई तक पाया जाता है। इसका वृक्ष तेजी के साथ बढता है व मध्यम प्रमाण का होता है । इसकी छाल उभारयुक्त व शाखायें श्वेताभ होती हैं । इसका फल वृक्षाकार, झिल्लीदार पंख से युक्त होता है। बीज चपटे होते हैं । गुजरात में यह वृक्ष सर्वत्र देखने में आता है। हिन्दी में इसकी गन्ध भी

अत्यन्त तीक्ष्ण होती है। अतः इसका पूतिगन्ध नाम भी हैं। इसके फल में छोटा चिरौंजी जैसा बीज निकलता है जो खाया जाता है।

गुण कर्म

रस – तिक्त, कटु, कषाय।

गुण – लधु तीक्ष्ण,

वीर्य – उष्ण।

विपाक – कटु

❖ **हैमवती वचा** *(Iris ensata)*– यह ईरान और कश्मीर में विशेषतः होता है। हिमालय, प्रदेश में होने से हैमवती कहते हैं। मुसलमानों की कब्र पर लगाई जाने के कारण इसे मजारपोश या मजारमुण्ड भी कहते है। इसका प्रयोज्यांग मूल है।इसे बाल वच व पारसीक वचा भी कहा जाता है।राज निघण्टु में इसका वर्णन मेध्या नाम से किया गया है। [22]

गुण कर्म

गुण – लधु, रूक्ष, तीक्ष्ण,

रस – कटु, तिक्त

विपाक – कटु

वीर्य – उष्ण

विमर्श

संतर्पणजन्य विकार अर्थात् अधिक पौष्टिक और गरिष्ठ आहार का अतिमात्रा में सेवन तथा श्रम के अभाव में शरीर में होने वाले सभी रोगों का समावेश इनके अन्तर्गत होता है। प्रमेह (डायबिटीज), ह्रदय रोग, स्थौल्य आदि रोग संतर्पणजन्य विकारों के मुख्य उदाहरण हैं। संतर्पण जन्य व्याधि में मुख्यतः अव्यायाम दिवास्वाप और श्लेष्मल आहार को निदान माना गया है। सामान्यतः मधुररस सेवन, गुरू, शीत, स्निध इत्यादि कफ प्रकोपक आहार विहार सेवन से व श्रम न करने के कारण कफ की वृद्धि होती है। जिसके कारण सन्तर्पणजन्य विकार उत्पन्न होते हैं। लेखनीय महाकषाय का वर्णन सर्वप्रथम आचार्य चरक ने किया। जिसके अन्तर्गत दस ऐसे द्रव्यों का वर्णन किया जो मुख्य रूप से लेखन कर्म करते हैं। लेखन शब्द लिखु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ हटाना या खुरचना होता है। धातुओं के सम्बन्ध में लेखन एक अपतर्पण कर्म है। जो कि लंधन के साथ साम्य रखता है। और बृहंण के प्रति असाम्यता दर्शाता है। तथा इससे शरीर धातुओं की विशेषता मेद और मांस की कमी होती है।

सूत्र स्थान के प्रथम अध्याय दीर्धज्जीवितीय अध्याय में सभी भावों (द्रव्य, गुण, कर्म) की वृद्धि का कारण सामान्य (समानता) कहा हैं व विशेष (सामान्य से वैशिष्टय) हास का कारण कहा है [23]

(सर्वदा सर्वभावानां..... प्रवृत्ति रूभयस्य तु।।) (च0सू0 ***1/44)***

अतः कफ के गुणों के विपरीत गुण, वीर्य विपाक वाले आहार विहार का सेवन जैसे रूक्ष, उष्ण व तीक्ष्ण इत्यादि कफशामक आहार विहार का सेवन व आलस्य त्याग, श्रम करने के कारण कफक्षय होता है व मेदोवह स्त्रोतस का अवरोध समाप्त हो जाता है। जिसके उपरान्त कफ का शमन हो जाता है। इस प्रकार कफ के विपरीत गुण वाले द्रव्यों देह में लेखनकर्म होता है। आचार्य चरक ने संतर्पणजन्य विकारों की चिकित्सा सूत्र में अपतर्पण कर्म को मुख्य माना है। जिसके अन्तर्गत लेखन छेदन रूक्षण कर्मो का समावेश किया जा सकता है क्योंकि ये तीनों ही कर्म मांस और मेद का क्षपण करते हैं। आचार्य शार्ग्डधर ने लेखन के बारे में कहा है। कि ये धातु व मलों का लेखन कर देह को विशोष्य करतीहै।[24]

धातून् मलान् वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्। *(शा0पू0 4/10)*

आचार्य सुश्रुत ने लेखन द्रव्यों के बारे में बताया है। ये द्रव्य वायु व अग्नि तत्वों से बने होते है। वायु और अग्नि महाभूत लेखन कर्म को प्रतिपादित करने के लिए मुख्य महाभूत है।[25] यथा *लेखनमनिलानलीभूयिष्ठम्* (सु0सू 41/10)

आचार्य चरक ने लेखन द्रव्यों को लघु, तीक्ष्ण, विशद रूक्ष, सुक्ष्म, खर, सर और कठिनगुणयुक्त एवं उष्णवीर्य कहा हैं । [26]

लघुष्ण तीक्ष्णविशदं..... स्मृतम्।। (च0सू022/12)

वायु और अग्नि तत्व दोनो ही शोषक गुण होते हैं तथा पृथ्वी और जल से विपरीत गुण होने से विशेष रूप से मांसधातु व कफ को सुखाते हैं। अतः कफ के विपरीत गुणधर्म वाले द्रव्य लेखनकर्म करते हैं।

लघु गुण– यह गुण गुरू गुण के विपरीत कार्य करता है। यह वायु अग्नि और आकाश महाभूत की अधिकता से उत्पन्न होता है। जिससे शरीर में लघुता तथा धातुक्षय की स्थिति उत्पन्न होती है और वायु की क्रियाओं की अधिकता होती है। शरीर में लधुता उत्पन्न होती है।

रूक्ष गुण–यह गुण पृथ्वी, वायु तथा अग्नि महाभूत की अधिकता के के कारण उत्पन्न होता है। रूक्षता वायु महाभूत का विशिष्ट गुण होता है तथा आग्नेय द्रव्य रूक्ष कहे गये हैं। जो शरीर में जाकर द्रवशोषण एवं रूक्षता उत्पन्न करती है। जिससे शरीर में रूक्षता कठिनता और शुष्कता उत्पन्न हाती है। यह धातुओं को तथा बल वर्ण को सुखाता है। यह गुण रिनग्ध गुण के विपरीत कार्य करता है एवं कफहर है।

कटु, तिक्त, कषाय रस– इसके पंचमहाभूत भौतिक संगठन में वायु और आकाश महाभूत की अधिकता से तथा कषायरस वायु तथा पृथ्वी महाभूत की अधिकता से उत्पन्न होती है। कटु रस का पांचभौतिक संघटन अग्नि और वायु महाभूत प्रधान है। कटु तिक्त, कषाय, तीनों ही रस वायु महाभूत प्रधान है कटु तिक्त कषाय, तीनों ही रस वायु महाभूत प्रधान है। शरीर में बात की वृद्धि कर लघुता उत्पन्न करते हैं।

कटु विपाक– कटु विपाक का पांचभौतिक संघटन अग्नि और वायु महाभूत प्रधान है। कटु विपाकी द्रव्य को सामान्यतः लेखनीय माना गया है। यह कफ तथा तत्सम्बन्धी धातुओं को कम करता है। इसमें लघु ,उष्ण, रूक्ष गुण का प्राधान्य होता है।

उष्ण वीर्य– लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण होने के कारण पाचन, विलयन, स्वेदन, विरेचन कर्म सम्पादित करता है।

वायु और अग्नि तत्व दोनो ही शोषक गुण होते हैं तथा पृथ्वी और जल से विपरीत गुण होने से विशेष रूप से मांसधातु व कफ को सुखाते हैं। अतः कफ के विपरीत गुणधर्म वाले द्रव्य लेखनकर्म करते हैं। इस प्रकार लेखनीय महाकषाय के द्रव्य कटु

तिक्त कषाय रस, कटु विपाक, प्रधान गुण लघु रूक्ष और उष्ण वीर्य होने के कारण कफ और मेद के विपरीत गुणधर्म है और लेखन कर्म करते हैं। अतः लेखनीय महाकषाय के द्रव्य लेखन कर्म करने वाले सिद्ध है।

साक्ष्य .....

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में लेखनीय महाकषाय के द्रव्यो पर किये गये क्लीनिकल एवं प्रायोगिक परिक्षणो में इन द्रव्यो की संर्तपणजन्य विकार जैसे स्थौल्य, प्रमेह मेदोरोग, हृदय रोग आादि की चिकित्सा में कार्मुकता सिद्ध हो चुकी हैं। निशिकान्द एंव नरेश कायकवाड ने मुस्तक के एथेनॉलिक एकसट्रेक्ट का चूहों पर अध्ययन करते हुए मुस्तक के प्रमेहहर प्रभाव का परिक्षण किया । इस अध्ययन में मुस्तक को प्रमेह रोग चिकित्सा में प्रभावी पाया गया।[27] टी. सूक यून एट ऑल ने कुष्ठ के स्थौल्यनाशक प्रभाव का अध्ययन करते हुए पाया कि कुष्ठ एडिपोज कोशिकाओं के निर्माण को रोकता है।[28] रविन्द्र खरट एंव मीनल एट ऑल ने हरिद्रा का अध्ययन करते हुए उसके लेखन, प्रमेहनाशक,मेदोनाशक जैसे कर्मो का उल्लेख किया है।[29] अरून कशपल्ली एंव अनु अगस्टीन ने चूहों पर अतिविषा के मेथेनाल एक्सट्रेट का परीक्षण किया और इस अध्ययन में उन्होंने अतिविषा के लेखन कार्मो को पाया।[30] सुन्दरनाथ एट ऑल ने रोगियों पर अपने किये गये क्लीनिकल परीक्षण अध्ययन में पाया कि चिरबिल्व मधुमेह की उत्तम औषधि हो सकती है।[31] आयुर्वेदिक के विभिन्न प्रसिद्ध संस्थानों में लेखनीय महाकषाय का स्थौल्य, प्रमेह, हृदय रोग एंव अन्य सन्तर्पणजन्य विकारों में अध्ययन एंव परीक्षण किये गये। **हर्षिता कुमारी एट ऑल;** ने लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों पर किये गये अपने शोध कार्य में लेखनीय महाकषाय के द्रव्यो को **एन्टि ओबेसिटी एंड हाईपोलिपिडेमिक ड्रग्स** कहा। डा0 किरन ने स्थौल्य रोग पर किये गये शोध कार्य में लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों को स्थौल्य रोग की चिकित्सा में किया है।

स्वामी एम. के. ने लेखन द्रव्यों को वटी के रूप में एवं लेखन द्रव्यों की वस्ति का क्लीनिकल परीक्षण किया और उत्तम परिणाम प्राप्त किये। [32]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेखन कर्म संतर्पणजन्य विकारों की चिकित्सा के लिए महत्वपूर्ण कर्म है। जैसा कि विभिन्न आचार्यों के मत से यह ज्ञात हैं कि लेखन कर्म करने वाले द्रव्यों का भौतिक संघटन अग्नि और वायु है। जिनका मुख्य गुण तीक्ष्णता, उष्णता और रूक्षता है। इन्हीं के कारण लेखन कर्म होता है। इन सब प्रमाणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सन्तर्पणजन्य व्याधि के लिए लेखनीय द्रव्य उपयोगी औषधि है। इस प्रकार लेखनीय महाकषाय के द्रव्य अपने गुणकर्मों रूक्ष लघु एवं कटु, तिक्त कषाय रस और कटु विपाक के द्वारा तथा अपने लेखन एवं शोषण कर्म के द्वारा अपतर्पण कर्म करके मांस और मेद धातु का अपचय करते हैं तथा सन्तपर्णजन्य विकारों की चिकित्सा में प्रभावी हो सकते हैं। पूर्व में किये गये अनेक शोध कार्यो एवं शोध पत्रों के अध्ययन में भी यह पाया गया कि वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा के मतानुसार भी लेखनीय महाकषाय के द्रव्यों की कार्मुकता प्रमेह रोग, हृदय रोग और स्थौल्य रोगों में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। लेखनीय महाकषाय के सभी द्रव्य एकल औषध के रूप में भी अत्याधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुये हैं।

सन्दर्भ

1 आचार्य चरक, हिन्दी टीकाकार पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डा0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, (2013), चरक संहिता(पूर्वार्द्ध),सूत्र स्थान(30/23) चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी,

2 आचार्य चरक, हिन्दी टीकाकार पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डा0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, (2013), चरक संहिता(पूर्वार्द्ध),सूत्र स्थान(4/3) चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी,

3 आचार्य चरक, हिन्दी टीकाकार पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डा0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, (2013), चरक संहिता(पूर्वार्द्ध),सूत्र स्थान(5..7 / 23) चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी,

4 लीमैयोर बी टच ए एट आल एडमिनिस्ट्रेशन आफ साइप्रस रोटेण्डस टयूबर एक्सट्रैक्ट प्रीवेन्टस वेट गेन इन ओबीज जुकर रैट्स !फाइटोथेर रिसर्च 2007;21:724-730.

5 ,आचार्य धन्वन्तरि, हिन्दी व्याख्याकार डॉ0 गुरू प्रसाद शर्मा ,(2012), धन्वन्तरि निघण्टु,गुडुच्यादि वर्ग /39..40 पृष्ठ संख्या 24... 25 चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी,

6 आचार्य नरहरिपण्डित जी, हिन्दी व्याख्याकार डॉ इन्द्रदेव त्रिपाठी, (2006) राजनिघण्टु, ,पिप्पल्यादि वर्ग /142 पृष्ठ संख्या 163 चौखम्भा कृष्णदास अकादमी वाराणसी, ।

7 मो0 शोएब अखतर कार्डियोटोनिक एक्टिविटी आफ मेथेनोलिक एक्सट्रेक्ट आफ सासेरिया लप्पा लिन रूट pak.J Pharm.Sci.Vol26,No.6,Nov-2013.1197-1201.

8 एस पी अग्रवाल एट आल स्टडी इन देयर रिसर्च पेपर फार्मेकोलौजिकल स्टडीज आफ ए कुष्ठ जस्ट सस्पेनशन फार्मूलेशन एण्ड इवेल्यूएटेड दा ब्लड ग्लूकोज लेवल डिपार्टमेण्ट आफ फार्मास्युटिकल्स फैकल्टी आफ फार्मेसी जामिया हमदर्द हमदर्द यूनिवर्सिटी न्यू देहली

9 जी हेए किम एट आल एण्टी ओबेसिटी इफेक्ट आफ फरमेन्टेड कुरकुमा लौंगा फूड एण्ड न्यूट्रीशन रिसर्च 2016; 10 आचार्य भाव मिश्र, हिन्दी टीकाकार डा0 के सी चुनेकर, (2006), भावप्रकाश निघण्टु, पृष्ठ संख्या 116 भाग–.द्वितीय , चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी, .

11 शाह कमाल एट आल एण्टीडायबिटिक एक्टीबिटी आफ स्टैम बार्क आफ बर्बेरिस अरिसटाटा इन एलेक्जोन इनडयूज्ड डायबिटीज रैटस आई जे पी 2008.

12 गुप्ता जे के एट आल ब्लड ग्लूकोज लोअरिंग पोटेंशियल आफ स्टेम बार्क आफ बर्बेरिस अरिसटाटा इन एलोक्जेन इनडयूस्ड डायबिटिक रैटस इरेनियन जे आफ फार्मेकोलौजी एण्ड थेरेप्यूटिक्स 2010 जनवरी ;9[1]:21-24

13 शर्मा कोमल एट आल बर्बेरिस अरिसटाटा ए रिव्यू आई जे आर ए पी 2011] 2[2]383-388.

14 रेशमा एस परब एण्ड सुषमा ए मेंजी राइजोम आन एकोरस कैलामस शोड हाइपोलिपिडेमिक एक्टीविटी ओनली एट ए डोज आफ 200 mg/kg.(SICI 109-1573 (1998)

15 ,आचार्य धन्वन्तरि, हिन्दी व्याख्याकार डॉ0 गुरू प्रसाद शर्मा ,(2012), धन्वन्तरि निघण्टु,गुडुच्यादि वर्ग/9 पृष्ठ संख्या18 चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी

16 आचार्य प्रियव्रत शर्मा, (2004), प्रिय निघण्टु, शतपुष्पादि वर्ग /175 पृष्ठ संख्या108 चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी,

17 आचार्य नरहरिपण्डित जी, हिन्दी व्याख्याकार डॉ इन्द्रदेव त्रिपाठी, (2006) राजनिघण्टु, ,पिप्पल्यादि वर्ग /136 पृष्ठ संख्या162 चौखम्भा कृष्णदास अकादमी वाराणसी, ।

18 ,ली एच यो सी बी कू एस के हाइपोलिपिडेमिक इफैक्ट आफ वाटर एक्सट्रेक्ट आफ पिकोराइजा कुरोआ इन हाइ फैट डाइट ट्रीटेट माउस फिटोटेरापिया 2006;579-584.

19 द्विवेदी एस इफेक्ट आफ प्लमबेगो जेलेनिका इन हाइपरलिपिडेमिक रेबीट एण्ड इटस मौडीफिकेशन बाय विटामिन ई इण्डियन जे फार्माकोलौजिकल 1997;29:138

20 चेटटी के एम एट आल फार्मास्युटिकल स्टडी एण्ड थेरेप्यूटिक यूजेस आफ प्लमबेगो जेलेनिका एल रूटस चित्रक चित्रमूल इथनोबौटनिकल लीफलेट 2006,10;294-304.

21 कोटेचा एण्ड राओ[2007] क्लिनिकल इवेल्युएशन आफ हरिद्रा एण्ड चित्रक मैनेजमेन्ट आफ मेदोरोग ओबेसिटी जनरल आफ आयुर्वेदा ,1:226-28

22 आचार्य नरहरिपण्डित जी, हिन्दी व्याख्याकार डॉ इन्द्रदेव त्रिपाठी, (2006) राजनिघण्टु, ,पिप्पल्यादि वर्ग /53 पृष्ठ संख्या 145 चौखम्भा कृष्णदास अकादमी वाराणसी, ।

23 आचार्य चरक, हिन्दी टीकाकार पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डा0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, (2013), चरक संहिता(पूर्वार्द्ध),सूत्र स्थान(1 / 44) चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी,

24 आचार्य शार्ग्ङधराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार डॉ0 ब्रहामानन्द त्रिपाठी, (2013), शार्ग्ङधर संहिता,पूर्व खण्ड(4/10) चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी,

25 आचार्य सुश्रुत, हिन्दी टीकाकार कविराज डॉ0 अम्बिकादत्तशस्त्री,(2010),सुश्रुत संहिता (पूर्वार्द्ध), सूत्र स्थान(41/10) चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी,

26 आचार्य चरक, हिन्दी टीकाकार पं0 काशीनाथ पाण्डेय एवं डा0 गोरखनाथ चतुर्वेदी, (2013), चरक संहिता(पूर्वार्द्ध),सूत्र स्थान22/12) चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी,

27 निशिकन्द ए रौत एण्ड नरेश जे गायकवाड एन्टीडायबिटिक एक्टीविटी हाइड्राएथेनोलिक एक्सट्रेक्ट आफ साइप्रस रोटेन्डस इन एलोक्जेन इनडयूस्ड डायबिटिक रैटस फिटोटेरापिया वौल्यूम 77 इशू 7-8, दिसम्बर-2006 पेज 585-588)

28 टे सूक यून एट आल एण्टी ओबेसिटी एक्टीविटी आफ एक्सट्रेक्ट फ्राम सौसेरिया लप्पा कोरियन जे मेडिकल क्रौप साइन्स18(3): 151—156(2010)

29 खरत रविन्द्र साहिबराव एण्ड लैड मीनल दीपक रिव्यू आफ फार्मेकोलौजिकल एक्टीविटीज आफ हरिद्रा कुरकुमा लौंगा WJPCR,2014,Volume-3,Issue-6,412-423]

30 अरून कूरापल्ली एण्ड अनू आगस्टीन सुबाश हाइपोपिडेमिक इफैक्ट आफ मिथेनाल फ्रैक्शन आफ एकोनिटम हैटरोफिल्लम वाल एण्ड दा मैकानिज्म आफ एक्शन इन डाइट इनडयूस्ड ओबीज रैटस ; JAPT & R, 2012, Oct- Dec -3(4); 224-228.

31 सुरेन्द्रनाथ एट आल क्लिनिकल स्टडी आन चिरबिल्व विद स्पेशल रिफरेन्स टू इटस रोल इन हाइपोग्लाइसीमिया", WJPR,2015,vol-4,Issue-8

32 स्वामी एम के -" स्थौल्य रोग के परिपेक्ष्य में लेखन वटी एवं लेखन वस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन जयपुर राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर